

Vulnerable Birds

The International Union for Conservation of Nature and Natural Resources (IUCN) which is an international organization working in the field of nature conservation and sustainable use of natural resources has divided the Birds into Categories. The IUCN issues a Red List, in which IUCN categorizes species into nine different categories on the basis of rate of decline, population size, area of geographic distribution, and degree of population and distribution fragmentation. One such Category of Birds is "Vulnerable" (VU), wherein those Birds species comes which have high risk of endangerment in the wild.

The Department of Posts is pleased to release a set of three stamps on the following three Vulnerable birds.

Nilgiri Wood Pigeon/ *Columba elphinstonii* (Sykes, 1833):

This pigeon qualifies as Vulnerable owing to its small, declining population; a consequence of the widespread destruction of its forest habitat. This Bird is thought to be endemic to the hill-ranges of the Western Ghats, south-west India, occurring from north-west Maharashtra, through Karnataka and Goa, to southern Kerala and western Tamil Nadu. This Bird is a large pigeon with mostly chestnut-maroon upperparts and greyish head and underparts. Prominent black-and-white patterned hindneck. Uniform dark slaty tail. Juveniles have less distinct neck pattern and are duller above with chestnut fringing on mantle and wing-coverts. The species does not necessarily occur across all suitable forest patches in Sahyadri Tiger Reserve – a part of Northern Western Ghats, which is suggestive of possible overestimation in the current projected range of the species in Western Ghats. It is virtually confined to moist evergreen, semi-evergreen forest, and moist deciduous forest including densely wooded ravines and hollows ("sholas"), chiefly in foothills and mountains up to 2,250 m, but there have been an increasing number of records in the lowlands down to 20 m. Historically, it was hunted for food and sport, which probably contributed to its decline. Currently, the loss, degradation and increasing fragmentation of forest are a greater concern. It is legally protected in India and occurs in several protected areas. A remote sensing project is planned to attempt to delimit the range and assess rates of forest loss.

Broad Tailed Grass Warbler/ *Schoenicola platyurus* (Jerdon, 1844):

This species has a small, fragmented, declining range and population as a result of the clearance and modification of grasslands. It therefore qualifies as Vulnerable. This Bird is endemic to the Western Ghats, India, where it is known from Maharashtra, Andhra Pradesh, Karnataka, Kerala and Tamil Nadu. Large, plain warbler with whitish underparts and broad, rounded tail. Rufescent-brown upperparts when breeding, but colder and greyer when plumage worn. Faint, dark cross-bars on

tail and narrow, pale supercilium that extends to just behind eye. It inhabits dense, tall grass and reeds, interspersed with patchy scrub and bushes on open hillsides, sometimes on steep slopes, but particularly marshy or damp depressions around hilltops, at 900-2,000 m. It also occurs in dense screw pine swamps, lemon grass and dwarf dates and at the edges of forest. This species is threatened by the mismanagement of native shola grasslands, as these habitats are little valued and many areas have been planted with exotic tree species. It is known to occur in several protected areas, including Bramhagiris Wildlife Sanctuary, Aralam Wildlife Sanctuary, Eravikulam National Park, Periyar Tiger Reserve, Kalakkad-Mundanthurai Tiger Reserve, Neyyar Wildlife Sanctuary, Peppara Wildlife Sanctuary and Silent Valley National Park.

Nilgiri Pipit / *Anthus nilghiriensis* (Sharpe, 1885):

This species is listed as Vulnerable because it has a small range in which its habitat is severely fragmented and declining in extent and quality, which in turn is suspected to be driving a decline in its small population. This species is endemic to the Western Ghats of Kerala, Tamil Nadu and Karnataka, southern India. It is locally fairly common within its small range, particularly above 2,000 m. Surveys conducted in 2002-2004 found the species to be almost extinct at some former sites, suggesting that the population is in decline. It occurs on grassy upland slopes interspersed with bushes and trees, mainly above 1,500 m, and is commonest over 2,000 m, but sometimes descends to 1,000 m. The species has been observed to feed mostly on creeping grass in valleys, but to nest in marshy grasslands with slightly taller grasses and sedges, particularly near streams. Nilgiri pipit has broad deep buff to whitish supercilium, darker buff ear-coverts, sometimes some dark spots in malar region; crown and upperparts tawny-olive or warm grey-brown with greenish-yellow tinge; crown to mantle and scapulars heavily streaked blackish-brown, back to uppertail coverts streaked grey-brown. Remiges and wing coverts dark brown, with two wing bars. Tail dark brown. Throat, breast and flanks deep buff; belly paler buff, with blackish brown streaks on breast and flanks. Iris dark brown; bill blackish; legs pale pink or yellowish pink.

Its grassland habitat is gradually being converted to plantations of tea, eucalyptus and silver wattle. The unintentional spread of wattle and invasive scotch broom to grasslands is another long-term threat. Livestock grazing and frequent fires also pose threats to the species.

Credits:-

Text : Based on the material available on internet

Stamp / Miniature Sheet/

FDC/Brochure/ : Shri Suresh Kumar

Cancellation Cachet : Smt. Nenu Gupta

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts India

विवरणिका BROCHURE



असुरक्षित पक्षी Vulnerable Birds

असुरक्षित पक्षी

अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधन संरक्षण संघ (आईयूसीएन) एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, जो प्रकृति के संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग के क्षेत्र में कार्यरत है। इस संघ ने पक्षियों को श्रेणियों में विभाजित किया है। आईयूसीएन एक लाल सूची (रेड लिस्ट) जारी करता है जिसके अंतर्गत आईयूसीएन ने प्रजातियों को उनकी घटने की दर, संख्या, स्थिति, भौगोलिक वितरण क्षेत्र, संख्या तथा वितरण विखंडन की स्थिति के आधार पर नौ विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया है। पक्षियों की ऐसी श्रेणियों में से एक श्रेणी “असुरक्षित” (वी.यू.) है, जिसके अंतर्गत पक्षियों की उन प्रजातियों को शामिल किया गया है जिनकी वनों में विलुप्त होने की अत्यधिक आशंका है।

डाक विभाग निम्नलिखित तीन असुरक्षित पक्षियों पर तीन डाक-टिकटों के एक सेट को जारी करके प्रसन्नता का अनुभव करता है।

नीलगिरि जंगली कबूतर/कोलम्बा एल्फिन्स्टोनाए (स्काईज, 1833) :

कबूतर की इस प्रजाति को, इसके प्राकृतिक वन्य-वास के व्यापक हास के परिणामस्वरूप, इसकी अल्प एवं निरंतर कम होती संख्या के कारण “असुरक्षित” श्रेणी में रखा गया है। इस पक्षी को पश्चिमी घाट की पर्वत श्रृंखला की स्थानिक प्रजाति माना जाता है, जो उत्तर पश्चिमी महाराष्ट्र, कर्नाटक और गोवा से केरल और पश्चिम तमिलनाडु में पाई जाती है। यह पक्षी एक बड़े आकार का कबूतर है जिसका ऊपरी भाग भूरा-गहरे लाल रंग का तथा सिर और निचला भाग स्लेटी रंग होता है। इसकी गर्दन के पश्च भाग में काले और सफेद रंग में एक अद्भुत पैटर्न बना होता है। इसकी पूंछ एकसार गहरे स्लेटी रंग की होती है। अपरिपक्व पक्षियों में गर्दन पर बना पैटर्न थोड़ा हल्का होता है, जो ऊपर की ओर, हल्के रंग का होता है। इसका मुखावरण और कानों को आवृत करते पंखों की किनारी गहरे भूरे रंग होती है। यह प्रजाति, उत्तर पश्चिमी घाट के सहयाद्री बाघ रिजर्व के सभी उपयुक्त वन स्थलों में अनिवार्य रूप से प्रायः नहीं पाई जाती है। इससे यह प्रतीत होता है कि पश्चिमी घाट में इस प्रजाति का मौजूदा आकलन संभवतः वास्तविकता से अधिक लगाया गया है। वास्तव में यह प्रजाति नम सदापर्णी, अर्ध सदापर्णी वन तथा नम पर्णपाती वनों तथा घने वन्य दर्रा और कंदरों (“शोला”), मुख्य रूप से तलहटियों और 2,250 मी. तक की ऊँचाई वाली पर्वत श्रृंखलाओं में पाई जाती है। किंतु यह प्रजाति, 20 मी. नीचे तक के तराई क्षेत्रों में अब बहुत देखी जाती रही है। ऐतिहासिक रूप में देखा जाए, तो भोजन और क्रीड़ा हेतु इसका शिकार किया जाता था, जिससे संभवतः इसकी संख्या कम होती गई। मौजूदा समय में वनों को क्षति, उनका नष्ट होना और विखंडन चिंता का विषय है। भारत में वैधानिक रूप से इसे संरक्षण प्रदान किया जा रहा है तथा अनेक संरक्षित क्षेत्रों में यह प्रजाति पाई जाने लगी है। इस पर्वत श्रृंखला को असीमित करने तथा वन क्षति की दर का मूल्यांकन करते हेतु एक सुदूर संवेदन परियोजना तैयार की जा रही है।

चौड़ी दुम घास फुदकी/ श्योनिकोला प्लेटीयूरस (जर्डन, 1844) :

घट रहे घास के मैदानों तथा इनके स्वरूप में आए बदलाव के परिणामस्वरूप, इस प्रजाति के पक्षियों की संख्या निरंतर गिर रही है। इसलिए, इन्हें पक्षियों की असुरक्षित श्रेणी में रखा गया है। यह पक्षी भारत के पश्चिमी घाटों का स्थानीय पक्षी है, जो महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में पाया जाता है। बड़ी, सारी घास फुदकी का अधोभाग सफेद रंग का होता है तथा इसकी दुम चौड़ी और गोल होती है। प्रजनन के समय इसका ऊपरी भाग आरक्त-भूरा होता है, लेकिन पंख आने पर इसका रंग स्लेटी और धूसर हो जाता है। दुम पर हल्की, घनी आड़ी-तिरछी धारियां होती हैं और पतली, पीली भाँहें होती हैं, जो ठीक आंखों के पीछे तक फैली होती हैं। यह घनी, लंबी घास और पत्तियों में रहता है, जो खुली पहाड़ियों के किनारों पर विषम झाड़ और झाड़ियों में छितरा रहता है, कभी-कभी

यह खड़ी चट्टानों के ढलानों पर भी होता है, लेकिन विशेष रूप से, पहाड़ की चोटियों के आस-पास, 900-2000 मीटर पर दलदल अथवा नमी वाले गर्त में होता है। यह घने स्क्रूचीड के दलदल में, नीबू घास में और खजूर के छोटे पेड़ों और जंगल के किनारों पर भी पाया जाता है। इस प्रजाति को स्थानीय शोला घास स्थलों के कुप्रबंध से खतरा पैदा हो गया है, क्योंकि ये स्थल रहने के लिहाज से बहुत कम उपयोगी होते हैं और बहुत से क्षेत्रों में अन्य किस्मों के पौधे लगा दिए गए हैं। यह अनेक संरक्षित क्षेत्रों में रहता है जिनमें ब्रह्मगिरी वन्यजीव अभयारण्य, आरालम वन्यजीव अभयारण्य, इराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान, पेरियार टाइगर रिजर्व, कालाक्कड-मुंडानथुरे टाइगर रिजर्व, नैय्यर वन्यजीव अभयारण्य, पेप्पारा वन्यजीव अभयारण्य, और साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान शामिल हैं।

नीलगिरी पिपिट/एन्थस नीलगिरीयंसिस (शापें, 1885)

इस प्रजाति को असुरक्षित प्रजाति के रूप में इसलिए सूचीबद्ध किया गया है, क्योंकि इन पक्षियों के प्राकृतिक वास का दायरा अत्यधिक सीमित है जोकि अत्यंत विखंडित है और जिसके क्षेत्रफल और गुणवत्ता में कमी होती जा रही है। इसके परिणामस्वरूप, इसकी अल्प संख्या में और अधिक कमी आने की आशंका की जा रही है। यह प्रजाति दक्षिण भारत के पश्चिमी घाट में केरल, तमिलनाडु और कर्नाटक में पाई जाने वाली स्थानिक प्रजाति है। स्थानीय तौर पर यह प्रजाति अपने सीमित क्षेत्र में, विशेषकर 2000 मी. से अधिक ऊँचाई पर सामान्य तौर पर पाई जाती है। वर्ष 2002-2004 में आयोजित सर्वेक्षणों में यह प्रजाति उन स्थलों में लगभग विलुप्त थी, जहां पहले यह प्रजाति बहुतायत में पाई जाती थी। इससे यह स्पष्ट होता है कि इसकी संख्या में कमी आती जा रही है। यह प्रजाति झाड़ियों और पेड़ों से घिरी घास की उच्च भूमि वाली ढाल पर, मुख्य रूप से 1500 मी. से अधिक की ऊँचाई पर पाई जाती है, और 2000 मी. से अधिक ऊंचे स्थलों पर आमतौर पर पायी जाती है, कहीं-कहीं यह प्रजाति 1000 मी. की ऊँचाई पर भी देखी जाती है। यह प्रजाति घाटियों में, मुख्य रूप से लताओं से अपना भोजन प्राप्त करती है, किंतु घाँसला बनाने के लिए यह विशेषकर जल स्रोतों के निकट कच्ची घास के मैदानों में उगने वाली लम्बी घास और सेज के पौधों को पसंद करती है। नीलगिरी पिपिट की भौह हल्के बादामी से लेकर सफेद रंग की होती है। इसके, कानों को आवृत करते गहरे बादामी रंग के पंख होते हैं, इसके गण्डास्थि क्षेत्र में यदा-कदा काले धब्बे भी नजर आते हैं; शीर्ष तथा शरीर का ऊपरी भाग हरा-पीला रंग लिए भूरे-जैतून के रंग का अथवा चमकीला स्लेटी-भूरा होता है, शीर्ष से लेकर मुखावरण तथा कंधे वाले क्षेत्र में काले-भूरे रंग की घनी धारियां होती हैं, पश्चभाग से लेकर पूंछ के ऊपरी भाग को आच्छादित करते पंखों में स्लेटी-भूरे रंग की धारियां होती हैं। इसके पर और कानों को आवृत करते पंख गहरे भूरे रंग के होते हैं, जिनमें दो पट्टियां होती हैं। इसकी पूंछ गहरे भूरे रंग की होती है। इसका कण्ठ, वक्ष तथा पार्श्वभाग गहरे बादामी रंग का, उदर क्षेत्र हल्के बादामी रंग का होता है और वक्ष-स्थल और पार्श्वभाग में काली भूरी धारियां होती हैं। इसके आँख की पुतली गहरे भूरे रंग की, इसकी चोंच काले रंग की, टांगें हल्के गुलाबी रंग या पीलापन लिए गुलाबी रंगी की होती हैं।

घास के मैदान वाला इसका प्राकृतिक वास धीरे-धीरे चाय, युकलिप्टस और सिल्वर वाटल (चाँदी वाली) के बागानों में परिवर्तित होता जा रहा है। घास के मैदानों में वाटल और स्क्वॉच ब्रूम का तेजी से बढ़ता हुआ अनेच्छिक फैलाव भी इस प्रजाति के लिए एक दीर्घकालिक खतरा है। पशुओं के चरने और अक्सर लगने वाली आग भी इस प्रजाति के लिए खतरा है।

आभार:-

पाठ	:	इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री के आधार पर आधारित
डाक टिकट/मिनियेचर शीट/		
प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका	:	श्री सुरेश कुमार
विरूपण मुहर	:	श्रीमति नीनू गुप्ता



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा (3)
Denomination	:	500 p (3)
मुद्रित डाक टिकटें	:	5.0 लाख प्रत्येक
Stamps Printed	:	0.5 million each
मुद्रित मिनियेचर शीट	:	1.0 लाख
Miniature Sheet Printed	:	0.1 million
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00